तीन बारी ओम शांति बोलने से...

लाइट, माइट और एवरीथींग राइट

दादी जानकी का नाम स्मृति पटल पर आते ही दादी माना ज्ञान की देवी, पवित्रता की मूर्त, उनके अथॉरिटी के बोल, परमात्मा(बाबा) पर अटूट निश्चय और स्नेहमयी सम्बन्ध निभाने वाली। उसके सामने जो कोई भी जाता तो ज्ञान, योग, अनुशासन व शक्ति की महक बिना लिए वापिस नहीं लौटता। वो बाबा का प्यार सबको लुटाती थीं। हमने दादी को 1985 से देखा है। वे ईश्वरीय सेवाओं के लिए विदेशों का, मुख्यालय लंदन में रहकर विश्व भर में प्यार व परमात्म संदेश देने के लिए सेवारत थीं। ना सिर्फ संदेश किन्तु हमारा बाबा कौन है, कैसा है, उसका अनुभव भी कराती थीं। वे हमेशा कहती थीं कि बाबा को कम्बाइंड रख सेवा करो। हमेशा स्मृति में रखो कि करनकरावनहार करा रहा है और हमारा भाग्य बना रहा है।

- ब्र. कु. गंगाधर

उसका प्रैक्टिकल में दूसरों को साक्षात्कार कराने में दादी को महारथ हासिल थी।

2007 में दादी जानकी मुख्य प्रशासिका बनीं। वे यज्ञ के सभी डिपार्टमेंट वालों से मिलती थीं और परिचय लेती थीं कि कौन कहाँ-कहाँ, क्या-क्या सेवा कर रहे हैं उनके बारे में बारीकी से जानकारी लेती थीं। यज्ञ कारोबार के निमित्त हमारा बार-बार दादी से मिलना होता था। और मैं हर ओम शांति मीडिया का इश्यू दादी को दिखाता था। दादी बड़े प्यार से देखती और एक-एक प्रकाशित लेख को व समाचारों को बड़े ध्यान से पढ़ती थीं और पूछती थीं कि ये सारा आप बनवाते हैं? मैं कहता था कि बाबा की कमाल है। दादी हर पेज पढ़ती और उसमें छपा रंगीन पृष्ठ सजा और क्लीयर लिखित देखकर दादी पूछती थीं कि ये सारे देश-विदेश में जाता है? फिर हमने कहा हाँ दादी लाखों की संख्या में जाता है। कहने का मतलब है कि दादी हर चीज़ की जानकारी रखती थीं। और दिल से दुआयें देती थीं।

हमने सभी मुधबन वासी के संग दादी का सौवां बर्थडे ओमशांति मीडिया कार्यालय में मनाने का निर्णय लिया। और जब ये निमंत्रण दादी के पास लेकर गया तो दादी ने तुरंत अपनी निजी सचिव ब्र.कु. हंसा बहन को कहा कि मुझे ओमशांति मीडिया कार्यालय में जाना है इसका प्रोग्राम बनाओ। और दादी की स्वीकृति मिलने के पश्चात् हमने पूरे कार्यालय को खूब सजाया। दादी के साथ वर्तमान समय नवनियुक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी भी साथ में आईं। दोनों दादियां करीब 3 घंटे कार्यालय में रहीं। दोनों दादियां कार्यालय में पहुँचते ही एक-एक चैम्बर में गईं और कौन कहाँ बैठता है, उनकी क्या सेवा है, उसको बारीकी से दादी ने देखा भी और परिचय भी लिया। तत्पश्चात कार्यालय के हॉल में दादी ने अपने सम्बोधन में कहा कि कमाल है ओमशांति मीडिया वालों की। दादी हमेशा कहती थीं तीन बारी ओम शांति बोलकर ही कोई कार्य आरम्भ करो। दादी ने तीन बारी ओमशांति बोलने का अर्थ का मर्म समझाते हुए कहा कि पहली बार ओम शांति बोलने से लाइट हो जाते हैं, दूसरी बारी ओम शांति बोलने से माइट आ जाती है और तीसरी बारी ओम शांति बोलने से एवरीथींग राइट हो जाता है।

हमने देखा दादी की स्मरण शक्ति भी बहुत पॉवरफुल थी। जैसे ही दादी जानकी ओमशांति मीडिया कार्यालय में पहुँची तो जब मैंने फूलों के गुलदस्ते से स्वागत किया, तो दादी ने कहा ये तो टोली (प्रसाद) वाला भाई है। तो ये बात 1985 की है जब मैं पाडंव भवन में टोली डिर्पाटमेंट में सेवा करता था और दादियों से बारम्बार मिलना होता था तो तब मैंने देखा कि आज भी दादी के मानस पटल पर तरोताजा अंकित था।

दादी के लिए अगर थोड़े शब्दों में कहें तो दादी एकॉनामी, एकनामी और एक्युरेट की स्वरूप थीं। बाबा की एक पाई भी व्यर्थ ना जाये, खर्च भी कम हो और काम भी एक्युरेट हो, समय की भी बचत हो और फास्ट सेवा हो। मेरा बाबा कौन है, उसका फास्ट संदेश सारे विश्व को मिल जाये ये उसके मन में अविरत धुन बजती रहती थी। दादी जनक देही से विदेही बन गईं। विदेही बन विश्व परिवर्तन के कार्य में तीव्र गति प्रदान करने हेतु अव्यक्तारोहण बनीं। दादी को हमारा शत-शत नमन और श्रद्धासुमन अर्पित है।

शांतिवन। ओमशांति मीडिया कार्यालय में दादी जानकी का सौंवा बर्थडे मनाया गया। जिसमें दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी व नेपाल की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ओमशांति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर व ब्र.कु. गोविंद,ज्ञान सरोवर।

कैसी भी बात आये पर खुशी ना जाये

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा की याद में बैठ, बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं।

कोई भी बात होती है, भले हिलाने वाली बातें आती हैं, बहुत कुछ लेन-देन भी चलती है लेकिन कोई भी परिस्थिति में मेरी अवस्था उस हलचल में हिले नहीं। अपनी मौज को न छोड़ें। सदा कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी रहूँ। कोई भी बात मुझे टच न करे, ऐसा हो सकता है? अगर बुद्धि में लक्ष्य है कि मुझे ऐसा चलना है, ऐसा बनना है तो कोई असम्भव बात नहीं है। जैसे शुरू-शुरू में हम आये तो लक्ष्य मिला ना कि कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे रहना है। बाबा की मुरलियों में भी भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रहने के लिए मिलती रहती हैं और संगठन में तो उसमें अटेन्शन तो रखना ही पड़ता है, भले साधारण हैं लेकिन चलेंगे तो सही, बोलेंगे तो सही ना। उसमें चेक करें कि मैं मर्यादापूर्वक हूँ, चलते-चलते सारा समय ठीक रहता हूँ? या कोई न कोई बात बीच में आ जाती है? ठीक चलते-चलते भी कभी बीच में आ जाती है तो उसकी जजमेन्ट के लिए चाहिए सचमुच योगयुक्त आत्मा। बाबा की याद में बैठ, बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं। भले पहले नहीं पता पड़ता है लेकिन चलते-चलते फिर मन में आ जाता है, सही बात भी आती है, वो कैच करें बस। ऐसे नहीं बात को भी चला लेवें। कर लेंगे, मेरी बुद्धि में स्पष्टीकरण तो है कि यह करना है लेकिन करने की हिम्मत कम है। जब करना ही है तो करना ही है, फिर उनको हल्का नहीं छोड़ें। किसी की भी मदद चाहिए तो ले सकते हैं। जो भी ऐसा हो जो राय देवे और उस पर चलने से फर्क हो। तो कोई भाई-बहनों से भी राय ले सकते हैं, थोड़ा वेरीफाई करना चाहिए। और खुशी कभी नहीं गंवायें, बातें तो आयेंगी। अगर अन्दर सन्तुष्टता हो कि मैं ठीक हूँ, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर चलते-चलते रूक जाते हैं और खुशी कम हो जाती है तो ज़रूर चेक करना चाहिए। खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है। खुशी नहीं होगी तो कई बीमारियाँ आ जाती हैं फिर संगठन का बन्धन भी है। आप चाहो आज यह नहीं करूँ, आपको करना ही पड़ता है। उसे खुशी से करें, मजबूरी से नहीं।

सर्व की बुद्धि को परिवर्तन करने का साधन-साइलेन्स

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

जब समय अनुसार साइंस इतनी प्रगति कर रही है, चाहे विनाश के लिए, चाहे नई दुनिया के लिए नई-नई खोज कर रही है फिर भी वह तो चांद और तारों तक ही जा पाते और हमें तो जाना है सूर्य, चांद से भी पार।

जहाँ मेरा नहीं, सब तेरा-तेरा है, तो कोई चिन्ता करने की बात ही नहीं है। बाबा ने सब चिन्ताओं से मुक्त कर दिया, सब दुःख दूर किया है, तू मिला सबकुछ मिला बाकी क्या इच्छा करूँ। जिसको जो भी ड्रामा अनुसार प्रवृत्ति मिली है उनको प्यार से निभाओ। सबसे पहली प्रवृत्ति तो इस देह की कर्मेन्द्रियों की ही है। आत्मा तो कर्मेन्द्रियों का राजा है ना, तो ऑर्डर से अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी प्रवृत्ति को चलाओ, ऐसी योग की शक्ति चाहिए तब कहेंगे मास्टर सर्वशक्तिमान। तो बाबा ने वरदान दिया है- मास्टर सर्वशक्तिवान बनो।

बाबा कहते, तुम बच्चे जब ऐसी सम्पूर्ण स्थिति बनायेंगे, तुम्हारी सूरत जब ऐसी दिव्य और अलौकिक होगी तब यह पुरानी दुनिया विनाश हो नई दुनिया की स्थापना होगी। तो क्या हम राजयोगी, बाबा की यह आश पूरी नहीं करेंगे? दूसरा, बाप को प्रत्यक्ष करना है। जब आप सभी की स्थिति ऐसी सम्पन्न दिव्य बने, ऐसा आप सबका चेहरा दिव्य हो तब ही आप बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। और वैसे भी बाबा कहते तुम्हें सारे विश्व को साइलेन्स का दान देना है। तो सभी अपने को ऐसा सम्पन्न बनाओ, विकर्म विनाश करो लेकिन साथ-साथ मन का मौन, मुख का व व्यर्थ संकल्पों का मौन रखो जिससे संकल्प, समय, शक्ति सब पॉवरफुल हो। और साइलेंस की ऐसी पॉवर चारों और फैले, हमसे ऐसे सूक्ष्म वायब्रेशन फैलें जिससे सचमुच पूरे विश्व में शान्ति की किरणें जायें क्योंकि हमारा लक्ष्य है विश्व में शान्ति हो। सारे विश्व को शान्ति का दान मिले, यह शान्ति की शक्ति ही सबकी बुद्धियों को बदलेगी और जो हमारी व बाबा की इच्छा व आश है - एक तो सबको मालूम हो कि कौन है तू कौन है वह जानें। और दूसरा - शान्ति की किरणें चारों और फैलें जिससे शान्ति की स्थापना हो अथवा यह अशान्ति जो है वो खत्म हो जाये। यह सूक्ष्म वायब्रेशन जायें क्योंकि कई लोग वायब्रेशन को बहुत मानते हैं। तो हमें विश्व को वायब्रेशन देना है। ताकि सबकी सूक्ष्म मनोवृत्तियां समय अनुसार परिवर्तित हों। जब समय अनुसार साइंस इतनी प्रगति कर रही है, चाहे विनाश के लिए, चाहे नई दुनिया के लिए नई-नई खोज कर रही है फिर भी वह तो चांद और तारों तक ही जा पाते और हमें तो जाना है सूर्य, चांद से भी पार, तो कौन ऊंचे हुए? साइंस बड़ी या साइलेन्स बड़ी? साइलेंस बड़ी हुई ना, तो क्यों नहीं हम ऐसी साइलेन्स की शक्ति चारों तरफ फैलावें, तब यह पुरानी दुनिया परिवर्तन हो और हम अपनी नई पावन शान्ति की दुनिया में चलें। हमने अपने संकल्पों के बन्धनों की रस्सियां जो बांधी हैं, उसको खोल दो तो कोई बन्धन नहीं है। वह रस्सी है मनमत। मनमत की रस्सियाँ छोड़ो, मनमत माना देहअभिमान, इस रस्सी को छोड़ो तो हम आत्मा मुक्त हैं अथवा बाबा के संग हम खुशियों का वरदान ले रहे हैं। अरे हमें भगवान ने कहा है तुम्हारी दृष्टि वृत्ति सब पावन हो। अब तो हम बाबा की पावन सजनियां हैं, पावन थे, पावन हैं और पावन रहेंगे। ऐसी इतनी स्वयं में पावन रहने की शक्ति हो।

कमाल है बाबा की ! ओमशांति का मंत्र सारे विश्व में गूंज रहा है

मीडिया वालों की महफिल में आकर मुझे बहुत ही खुशी हो रही है। कमाल है ओमशांति मीडिया वालों की। चारों तरफ ये मेरे साकार बाबा ने, मैंने बाबा को कहा कि बाबा अभी मेरे को देख हरेक ऐसे नमस्ते करता है मैं क्या बोलूँ उनको? जो देखेंगे, मिलेंगे वो बाबा ने प्यार से कहा, ओम शांति बोल दो। मुझे इतना अच्छा लगा, एक बारी ओम शांति कहो तो लाइट हो जाते हैं, दूसरी बारी कहो तो माइट आ जाती है, तीसरी बारी कहो तो एवरीथींग राइट हो जाता है। यहाँ आकर दादी हृदयमोहिनी को देखा तो ये महफिल और ही सुहानी हो गई। तो आज का दिन सामने बाबा को देख बोलीं कि बाबा की कमाल है। अब दुनिया वालों को संदेश देने के लिए ओमशांति मीडिया पत्रिका निकाली। ये बहुत ही अच्छा है। मुरली में बाबा ने वरदान में कहा ना कि बाबा को याद नहीं करो, बाबा को कम्बाइंड बना दो। इसमें इतना बल आता है। बाबा साथी है ना! मैं बस साथी बन जाऊं। हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। ये सारी लाइफ का अनुभव है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो मुझे काजी का, धर्मराज का डर नहीं है। धर्मराज की ताकत ना हो मेरे सामने आवे। मैं भाषण करना नहीं जानती हूँ, पर मेरा बाबा, शुक्रिया बाबा, जो आज दिन तक कहता है मुस्कराना तेरा फर्ज़ है, धर्म भी है तो कोई बात मुश्किल नहीं। उसके बाद धर्मराज को छुट्टी दी है। विदेश सेवा में बाबा ने भेजा है। खास बाबा के कमरे में दादीयों ने बाबा को बुलाया, मुझे विदेश भेजने के लिए। दादी ने विदेश का अनुभव साझा करते हुए कहा विदेश में खास मिडलिस्ट कंट्रीज में जाना हुआ, वहाँ मुझे बताया कि आपको मस्जिद में जाकर भाषण करना है। तो मैंने बाबा को कहा मैं क्या बोलूँगी? तब बाबा की बात याद आई बाबा ने कहा था कि तुम जाकर सिर्फ तीन बार ओमशांति बोलना, और उनको प्यार से दृष्टि देना। मैंने वैसे ही किया और वो बहुत खुश हुए। और कहा आप तो दादी कमाल की हैं। परमात्मा ने आपको एक फरिश्ते के रूप में हमारे यहाँ भेजा है। ये मेरा भाग्य है, दुनिया वालों को पता है ये कौन है और किसकी है। किसने यहाँ तक लायक बनाया है। उसमें भी इसके पास ऐसी आत्मायें निकली हैं भले और धर्म की हों। परन्तु उसको, अपने धर्म में भी अच्छी बनें ये भावना रखने से उनको खुशी होती है। और वो शांति का अनुभव करते हैं।

ओमशांति मीडिया में दादी जानकी और दादी हृदयमोहिनी।